* 0000800000001 *

Cambridge Assessment International Education

Cambridge IGCSE™

CANDIDATE NAME

CENTRE NUMBER

CANDIDATE NUMBER

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/01**

Paper 1 Reading and Writing **February/March 2025**

2 hours

You must answer on the question paper.

No additional materials are needed.

INSTRUCTIONS
- Answer **all** questions.
- Use a black or dark blue pen.
- Write your name, centre number and candidate number in the boxes at the top of the page.
- Write your answer to each question in the space provided.
- Do **not** use an erasable pen or correction fluid.
- Do **not** write on any bar codes.
- Dictionaries are **not** allowed.

INFORMATION
- The total mark for this paper is 60.
- The number of marks for each question or part question is shown in brackets [ ].

This document has **16** pages. Any blank pages are indicated.

NL 341862/1
© UCLES 2025

अभ्यास 1: प्रश्न 1–6

‘मारग्रेट से भगिनी निवेदिता’ आलेख को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

आयरलैंड में सन 1867 में जन्मी निवेदिता के बचपन का नाम मारग्रेट एलिज़ाबेथ नोबल था। उनके पिता एक पादरी थे। उन्होंने उनको सिखाया कि मानव जाति की सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है। मारग्रेट ने अपने पिता से धार्मिक संस्कार और आयरिश राष्ट्रवादी दादा हैमिल्टन से स्वतंत्रता और देशप्रेम की भावना को आत्मसात किया। चार वर्ष की उम्र में वे अपने माता पिता के साथ इंग्लैंड में रहने आईं। भौतिकी, कला, संगीत और साहित्य का अध्ययन करके वे उत्तरी वेल्स के एक कोयला खान के क्षेत्र में अध्यापन करने लगीं जहाँ उन्होंने अपने पिता से विरासत में मिले ग़रीबों के लिए सेवा और प्रेम भाव को पुनर्जीवित किया।

लंदन में शिक्षकों के एक समूह की नई शिक्षा पद्धति की चर्चा से प्रभावित होकर वे उसकी सक्रिय सदस्य बन गईं। शिक्षा की शुरुआत पाठ्य पुस्तकों की औपचारिक शिक्षा की जगह खेल, व्यायाम, अवलोकन आदि के माध्यम से विद्यार्थियों के शारीरिक और मानसिक विकास के नये प्रयोग को व्यवहार में लाने के लिए उन्होंने लंदन में अपना एक स्वतंत्र स्कूल खोला। लंदन के बुद्धिजीवियों के बीच वे एक सफल शिक्षिका, लेखिका, समाज सेविका और कुशल वक्ता के रूप में जानी जाने लगीं।

सन 1895 में लंदन में उनकी भेँट स्वामी विवेकानंद से हुई। विवेकानंद का भाषण सुनकर उनके त्याग और बलिदान के उदात्त विचारों से वे इतनी प्रभावित हुईं कि उन्हें लगा कि भारत ही उनकी वास्तविक कर्मभूमि है। भारत आने पर स्वामी विवेकानंद ने उन्हें दीक्षा दी और उनका नाम निवेदिता रखा। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में बंगला विभाग के अध्यक्ष, अमरनाथ गांगुली के अनुसार, ‘निवेदिता नाम के दो अर्थ हो सकते हैं: एक तो जिसने अपने गुरु के चरणों में अपना जीवन अर्पित कर दिया, जबकि दूसरा अर्थ निवेदिता पर ज़्यादा सही बैठता है कि एक ऐसी महिला जिन्होंने स्त्री शिक्षा के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया।’

निवेदिता में एक जुनून था जिसे स्वामी विवेकानंद ने पहचाना। वे अपने गुरु की प्रेरणा से स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में उस समय उतरीं जिस समय समाज के लोग अपनी लड़कियों को स्कूल भेजने के विरुद्ध थे। ऐसे सामाजिक विरोध के रहते स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन देना निवेदिता जैसी दृढ़ संकल्प महिला के लिए ही संभव हो सका। उन्होंने बुनियादी शिक्षा से वंचित लड़कियों के लिए एक स्कूल खोल कर सामाजिक असमानता को समाप्त करने का प्रयास किया। कोलकाता में बंगाली समुदाय के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े बुद्धिजीवियों के संपर्क में आकर उन्होंने अपने लेखन द्वारा अखिल भारतीय राष्ट्रवादी विचारधारा को प्रोत्साहन दिया। उनके योगदान को स्वीकार करते हुए अवनींद्रनाथ टैगोर ने कहा, ‘भारत से सच्चा प्रेम करने वाले विदेशियों में निवेदिता का स्थान सबसे ऊँचा है।’

DO NOT WRITE IN THIS MARGIN

DO NOT WRITE IN THIS MARGIN

1 निवेदिता का जन्म कहाँ हुआ था?

.... [1]

2 मारग्रेट ने अपना कार्यकारी जीवन कहाँ शुरू किया?

.... [1]

3 मारग्रेट ने अपने दादा से क्या सीखा?

.... [1]

4 निवेदिता को भारत जाने की प्रेरणा कैसे मिली?

.... [1]

5 निवेदिता ने शिक्षा पद्धति में क्या परिवर्तन किया?

.... [1]

6 भारत को निवेदिता की क्या देनें हैं? कोई 3 लिखिए।

....

....

.... [3]

[पूर्णांक 8]

अभ्यास 2: प्रश्न 7–15

‘गैंडों का संरक्षण’ लेख को ध्यान से पढ़ें। प्रश्न 7 से 15 का उत्तर देने के लिए उनके नीचे दिए गए अनुच्छेदों (A से D) में से सही अनुच्छेद चुन कर उसके सामने के कोष्ठक में सही का निशान लगाएँ। अनुच्छेदों को एक से अधिक बार चुना जा सकता है।

A पृथ्वी पर से बहुत से जानवर लुप्त हो गए हैं, पर अभी भी बहुत से अनोखे जानवर बचे हैं। उनमें से गैंडा पिछले पाँच करोड़ वर्षों से, प्राकृतिक वन का अभिन्न अंग रहा है। यह हाथी जितना शक्तिशाली और चीते जितना तेज़ दौड़ने वाला जानवर है। गैंडे के लिए अंग्रेज़ी का शब्द राइनोसेरस ग्रीक भाषा के दो शब्दों, राइनो अर्थात नाक और सेरस अर्थात सींग से मिलकर बना है। ‘नाक पर सींग वाला जानवर’ उसकी आकृति को परिभाषित करता है। यह 6 फुट से 11 फुट तक लम्बा और हज़ार से साढ़े तीन हज़ार किलोग्राम तक वज़न वाला स्तनधारी जानवर, हाथी के बाद सबसे भारी और पृथ्वी का चौथा सबसे बड़ा उभयचर जीव है। गैंडे का सींग क्रिएटिनिन नामक प्रोटीन से बना है। यह वही प्रोटीन है जिससे हमारे नाखून और बाल बनते हैं।

B प्राचीन काल में भारतीय गैंडे भारत के संपूर्ण उत्तरी इलाकों में, जिसे सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान कहते हैं, पाकिस्तान से लेकर भारत-म्यांमार सीमा, नेपाल, भूटान और बांग्लादेश तक फैले हुए थे। उनकी संख्या अपने आवासीय क्षेत्र के विनाश, रोग और बढ़ते तापमान के परिणाम स्वरूप तेज़ी से कम होती गई। साथ ही अवैध शिकार उनके अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा ख़तरा है। अब उनकी गणना संकटग्रस्त जानवरों में की जा रही है। भारत में अब यह असम और नेपाल की तराई के कुछ सुरक्षित इलाकों में ही पाया जाता है। भारतीय गैंडों की दो तिहाई संख्या असम के काजीरंगा नेशनल पार्क में है। उनके संरक्षण के लिए समुचित सुरक्षात्मक क्षेत्रों को बढ़ाने से पर्यटन उद्योग को भी बढ़ावा मिलेगा। एशिया में गैंडों की तीन प्रजातियाँ, भारत, सुमात्रा और जावा के गैंडों में मिलती हैं। इसके अतिरिक्त काली और सफ़ेद दो प्रजातियाँ केवल अफ्रीका के जंगलों में पाई जाती हैं।

C प्राचीन काल में गैंडे के सींग और चमड़ी के लिए उसका शिकार करना वीरता का प्रतीक माना जाता था। इसकी मजबूत चमड़ी से ढाल और कवच बनाए जाते थे। कुछ धारणाओं के अनुसार उसके सींग में खोई हुई यौवन शक्ति वापिस लाने का गुण होता है। कुछ लोग बुरी दृष्टि से बचने के लिए सींग से बने तावीज पहनते हैं। ऐसी मान्यता है कि सींग से बने प्याले में पेय पदार्थ पीने से विष का असर नहीं होता। किंतु इन मान्यताओं का कोई प्रामाणिक आधार नहीं है। गैंडे शाकाहारी जानवर हैं। वे घास के अतिरिक्त पेड़ की शाखाएँ, पत्तियाँ, झाड़ियाँ, फल और पानी में तैरते पौधे खाते हैं।

D सामान्यतः गैंडों के मुँह में 24 से 32 दाँत होते हैं जिनकी संख्या अलग-अलग प्रजातियों पर निर्भर करती है। वे अपने निचले दाँतों का उपयोग अपने प्रतिद्वंद्वी से लड़ने के लिए करते हैं। उनमें सूंघने और सुनने की क्षमता बहुत अधिक पर देखने की शक्ति बहुत कम होती है। उन्हें 30 मीटर की दूरी तक की चीजें देखने में भी दिक्कत होती है। गैंडे बहुत अच्छे तैराक होते हैं और पानी में रहना पसंद करते हैं। उन्हें सूर्य की रोशनी से परेशानी होती है। अपनी त्वचा को सूर्य की किरणों से बचाने के लिए वे कीचड़ में लोटते हैं। वे अपने शरीर पर मैना और बगुले को मजे से बैठने देते हैं क्योंकि वे उनकी त्वचा पर पनपे परजीवियों को खा लेते हैं। इसके अतिरिक्त ख़तरा देखने पर वे गैंडों को आगाह भी कर देते हैं। परजीवियों से छुटकारा पाने के लिए वे अपने शरीर को पेड़ों और पत्थरों पर भी रगड़ते हैं। नर गैंडा की अपेक्षा मादा का कद छोटा और वज़न कम होता है। दोनों की नाक पर सींग होता है। मादा गैंडा की गर्भावधि 15 से 16 महीनों तक होती है। नवजात बछड़े की नाक पर सींग नहीं होता है। एक बार में एक बच्चे को जन्म देकर मादा अपने बच्चे को दो तीन साल तक अपने साथ रखती है। संभोग और लड़ाई को छोड़कर वयस्क नर प्राय: अकेले रहते हैं। बछड़ों वाली मादा समूह में रहती है। संरक्षण में गैंडे लगभग चालीस वर्ष तक जीवित रहते हैं।

DO NOT WRITE IN THIS MARGIN

नीचे दिए गए वक्तव्यों (7–15) को पढ़िए तथा कोष्ठक में सही का निशान लगा कर बताइए कि कौन सा अनुच्छेद (A से D) किस वक्तव्य से सम्बंधित है।

उदाहरण:

पृथ्वी पर अनेक अनोखे जानवर पाए जाते हैं।

A ✓ B ☐ C ☐ D ☐

7 गैंडों के सींग और खाल का कई तरह से उपयोग होता है।

A ☐ B ☐ C ☐ D ☐ [1]

8 गैंडों की पाँच प्रजातियाँ हैं।

A ☐ B ☐ C ☐ D ☐ [1]

9 गैंडों की पीठ पर बैठ कर पक्षी उस पर रेंगने वाले कीड़े मकोड़े खाते हैं।

A ☐ B ☐ C ☐ D ☐ [1]

10 जलवायु परिवर्तन गैंडों के अस्तित्व पर संकट के कारणों में से एक है।

A ☐ B ☐ C ☐ D ☐ [1]

11 गैंडे के लिए प्रयुक्त ग्रीक भाषा के शब्द से उसके स्वरूप के बारे में पता चलता है।

A ☐ B ☐ C ☐ D ☐ [1]

12 गैंडों की नस्ल बचाने के लिए सुरक्षित आवास की व्यवस्था करके उन्हें अवैध शिकारियों से बचाया जाना चाहिए।

A ☐ B ☐ C ☐ D ☐ [1]

© UCLES 2025

13 गैंडों के सींग की उपयोगिता के बारे में नाना प्रकार की धारणाएँ प्रचलित हैं।

A ☐ **B** ☐ **C** ☐ **D** ☐ [1]

14 नर और मादा गैंडों में कुछ समानता होने के साथ अंतर भी है।

A ☐ **B** ☐ **C** ☐ **D** ☐ [1]

15 गैंडा धरती और पानी दोनों में रह सकता है।

A ☐ **B** ☐ **C** ☐ **D** ☐ [1]

[पूर्णांक 9]

DO NOT WRITE IN THIS MARGIN

BLANK PAGE

DO NOT WRITE IN THIS MARGIN

अभ्यास 3: प्रश्न 16–19

'घर से काम करना - सहायक या बाधक?' के बारे में निम्नलिखित आलेख को ध्यानपूर्वक पढ़िए।

आजकल घर से काम करना अर्थात ऑफिस जाने की जगह घर में लैपटॉप आदि तकनीकी उपकरणों द्वारा काम करना प्रचलित हो गया है। यह हमेशा सभी के लिए उपयुक्त नहीं होता और इसकी अपनी चुनौतियाँ भी हैं। कुछ कर्मचारी घर से काम करने में सहजता का अनुभव करते हैं, और कुछ अपने कार्य स्थल पर वापस जाकर अपने कार्यालय की प्रिय कुर्सी पर बैठने और अपने सहकर्मियों से मिलने के लिए लालायित रहते हैं। कुछ स्वतंत्र रूप से काम करने वाले हमेशा से अपने घर में कार्यालय बनाते रहे हैं। वर्षों पहले यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने कहा था, 'मनुष्य स्वभाव से एक सामाजिक प्राणी है; जो व्यक्ति गलती से नहीं बल्कि स्वाभाविक रूप से असामाजिक है, वह या तो हमारे जानने योग्य नहीं है या अति-मानव है। समाज एक ऐसी चीज है जो व्यक्ति से पहले है।'

कार्यालय जाकर काम करने के समर्थकों का मानना है कि मनुष्य अकेला नहीं रह सकता या यह कहें कि अकेले कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से काम नहीं कर सकता। घर से काम करते समय संचार माध्यम से सहकर्मियों के साथ जुड़ने और प्रत्यक्ष रूप से आमने-सामने बैठ कर विचार-विनिमय करने की प्रभावशीलता में अंतर उसकी उत्पादकता और गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है। समान लक्ष्य और उद्देश्य के साथ एक कार्यालय में सहकर्मियों के साथ काम करना या अपने से वरिष्ठ अधिकारी के साथ उत्साहजनक बातचीत करना, प्रेरणादायक हो सकता है। इस प्रकार के वातावरण का घर में अभाव रहता है। घर से काम करने से समाजीकरण और संपर्क स्थापित करने के अवसर कम मिलते हैं। ऐसा देखा गया है कि लंबे समय के लिए घर से काम करने वाले कर्मचारियों को कार्यालय में जाकर काम करने वालों की तुलना में पदोन्नति के कम अवसर प्राप्त हुए।

दूरस्थ कर्मचारी अनौपचारिक तरीके से तैयार होकर सुविधानुसार काम शुरू कर सकता है। काम पर जाने के लिए यातायात के साधनों से होने वाले उत्सर्जन से बचाव कर सकता है। यह सच है कि ऑफिस जाने के परिवहन के ख़र्च, आने-जाने का समय और ऊर्जा की बचत के साथ व्यक्ति अपनी सुविधा और शर्तों के अनुसार काम करके घरेलू दायित्व और कार्यभार में संतुलन अवश्य बना सकता है। लेकिन, दूरस्थ कर्मचारी काम और निजी जीवन के बीच की सीमा रेखा को बनाए नहीं रख पाने के कारण अधिक तनाव ग्रस्त भी हो सकता है। ऑफिस से काम करने वाले के लिए ऑफिस में घरेलू जिम्मेदारियों और घर में ऑफिस की जिम्मेदारियों से दूर अपने व्यक्तिगत जीवन और कार्यकारी जीवन के बीच स्वत: ही विभाजन बना रहता है।

एक हज़ार अमरीकी कर्मचारियों पर किए गए सर्वेक्षण में 32 प्रतिशत कर्मचारियों का कहना था कि दूरस्थ काम करते समय टीवी देखने का आकर्षण और बच्चों या पालतू जानवर की देखभाल करने की जिम्मेदारी बहुत बड़ी बाधा और उत्पादकता में कमी आने का कारण थी। इसके अतिरिक्त, बड़े शहरों में छोटे फ्लैटों में रहने वालों के लिए घर में पारिवारिक या आसपास के अन्य शोर से बचना और ऑफिस के लिए सुविधाजनक और उपयुक्त जगह बनाना संभव नहीं हो सकता। दूरस्थ कर्मचारी के लिए घर में कार्यालय जैसी काम करने की व्यवस्था के साथ बिजली के लगातार उपयोग से घरेलू बिजली के ख़र्च में बढ़ोतरी से समस्या हो सकती है। घर से काम करना काफ़ी हद तक प्रौद्योगिकी पर निर्भर करता है, अंतर्जाल संबंध में रुकावट आने से काम में व्यवधान आना एक अतिरिक्त गंभीर समस्या है। तकनीकी मुद्दे एक बड़ी चुनौती हो सकते हैं और नये उपकरण ख़रीदने के अनावश्यक ख़र्च वहन करना सबके लिए संभव नहीं हो सकता।

DO NOT WRITE IN THIS MARGIN

कोई सलाह देने वाला सहकर्मी न होने से दूरस्थ कर्मचारी आत्मनिर्भर हो जाता है। साथ ही कुछ कर्मचारियों का कहना है कि घर से काम करते समय कार्यालय की राजनीति, आपसी गपशप और रुकावटों से दूर रहने के कारण वे अधिक उत्पादक होते हैं। पर घर से काम करने में मिली स्वतंत्रता और लचीलेपन के साथ ही अकेलापन और उसके कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव भी जुड़े हैं। बड़े शहरों में नौकरी के सिलसिले में अपने परिवार से दूर अकेले रहने वाले कर्मचारियों के लिए यह एक चिंतनीय समस्या है। अकेले काम करते समय लगातार ध्यान केंद्रित करना और काम में रुचि बनाए रखना कठिन हो सकता है। काम के प्रति एकाग्रता के लिए आवश्यक आत्मानुशासन सबके लिए सहज नहीं होता। कर्मचारी काम के बीच अनावश्यक रूप से विराम लेकर उत्पादकता को हानि पहुँचा सकता है। साथ ही सहकर्मियों के प्रोत्साहन के अभाव में उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

DO NOT WRITE IN THIS MARGIN

अभ्यास 3: प्रश्न 16–19

‘घर से काम करना - सहायक या बाधक?’ आलेख के आधार पर नीचे दिए गए प्रत्येक शीर्षक (16–19) के अंतर्गत संक्षिप्त नोट लिखें।

16 कार्यालय में काम करने के निजी और कारोबारी लाभ

- ....
- .... [2]

17 कार्यालय में काम करने से संभावित हानियाँ

- ....
- .... [2]

18 घर से काम के पर्यावरणीय प्रभाव

- ....
- .... [2]

19 घर से काम करने से होने वाली असुविधाएँ

- ....
- ....
- .... [3]

[पूर्णांक 9]

अभ्यास 4 में आप आलेख और अपने नोट्स के आधार पर ‘घर से काम करना - सहायक या बाधक?’ शीर्षक आलेख का सारांश लिखेंगे।

DO NOT WRITE IN THIS MARGIN

DO NOT WRITE IN THIS MARGIN

अभ्यास 4: प्रश्न 20

अभ्यास 3 के आलेख 'घर से काम करना - सहायक या बाधक?' में काम करने के दो तरीकों का वर्णन है। अभ्यास 3 के आलेख और अपने बनाए नोट्स के आधार पर दूरस्थ कार्य और कार्य स्थल में जा कर काम करने के मुख्य लाभ और हानियों की तुलना कीजिए।

आपका सारांश अधिकतम **100 शब्दों** में होना चाहिए।

आप यथासंभव **अपने शब्दों** में लिखें।

आपको **अंतर्वस्तु के लिए** अधिकतम **4** अंक और **सटीक एवं संक्षिप्त भाषा-शैली के लिए** अधिकतम **6** अंक दिए जाएँगे।

[10]

[पूर्णांक 10]

DO NOT WRITE IN THIS MARGIN

अभ्यास 5: प्रश्न 21

आप छुट्टियों में एक समाचार पत्र के कार्यालय में काम करना चाहते हैं। सम्पादक के नाम आवेदन भेजने के लिए एक ई-मेल लिखें। आपके ई-मेल में निम्नलिखित बातें होनी चाहिए:

1 आपकी शैक्षणिक योग्यता
2 आप यह काम क्यों करना चाहते हैं
3 इस अनुभव से आपको क्या लाभ मिलेगा।

आपका ई-मेल लगभग 120 शब्दों में होना चाहिए।

आपको **3** अंक **अंतर्वस्तु के लिए** और **5** अंक **सटीक भाषा एवं शैली** के लिए दिए जाएँगे।

© UCLES 2025

[8]

[पूर्णांक 8]

DO NOT WRITE IN THIS MARGIN

अभ्यास 6: प्रश्न 22

'शारीरिक स्वास्थ्य ही सुखी जीवन की कुंजी है।'

आप कहाँ तक इस कथन से सहमत हैं? अपने विचारों को समझाते हुए स्कूल पत्रिका के लिए अपना लेख लगभग **200 शब्दों** में लिखिए। आपका लेख विषय से संबंधित जानकारी पर केन्द्रित होना चाहिए।

सुखी जीवन के लिए केवल नीरोगी काया आवश्यक

शारीरिक स्वास्थ्य के साथ आर्थिक स्वास्थ्य भी आवश्यक

ऊपर दी गई टिप्पणियाँ आपके लेखन के लिए दिशा प्रदान कर सकती हैं। इनके माध्यम से आप अपने विचारों को विस्तार दीजिए।

लिखित प्रस्तुति पर **अंर्तवस्तु के लिए 8** अंक तक और **सटीक भाषा शैली** के लिए भी **8** अंक तक दिए जाएँगे।

DO NOT WRITE IN THIS MARGIN
DO NOT WRITE IN THIS MARGIN
DO NOT WRITE IN THIS MARGIN
DO NOT WRITE IN THIS MARGIN
DO NOT WRITE IN THIS MARGIN

© UCLES 2025

.... [16]

[पूर्णांक 16]

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge Assessment International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge Assessment International Education is part of Cambridge Assessment. Cambridge Assessment is the brand name of the University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is a department of the University of Cambridge.

DO NOT WRITE IN THIS MARGIN